4

शिक्षण और पाठ्यसामग्री में लैंगिक संवेदनशीलता और शांति का विस्तृत अध्ययन - मालद्वीप के विशेष संदर्भ में

गौरी श्रीवास्तव*

बच्चों में लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालयी वातावरण, पाठ्यसामग्री और शिक्षण प्रक्रिया बच्चे में स्वस्थ दृष्टिकोण और मूल्य विकसित कर सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में मालद्वीपीय शैक्षिक नीतियों, पाठ्यक्रम और विविध पाठ्यपुस्तकों यथा अँग्रेज़ी, सामाजिक अध्ययन तथा पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों का लिंग संवदेनशीलता और शांति के दृष्टिकोण से मूल्यांकन किया गया है।

प्रस्तावना

मालद्वीप को केवल पर्यटन की दृष्टि से ही महत्वपूर्ण माना जाता है, किंतु शिक्षा जगत् में भी उसका अहम स्थान है। मालद्वीप एक ऐसा गणराज्य है, जिसमें हर बच्चा स्कूल जाता है। यहाँ का प्रारंभिक शैक्षिक स्तर दक्षिण एशिया की अपेक्षा बेहतर है। प्रस्तुत अध्ययन में मालद्वीपीय शैक्षिक नीतियों, पाठ्यक्रम और विविध यथा अँग्रेज़ी, सामाजिक अध्ययन तथा पर्यावरण अध्ययन पाठ्यपुस्तकों की लिंग संवदेनशीलता तथा शांति के दृष्टिकोण से मूल्यांकन किया गया है। मालद्वीप में शिक्षण क्रिया एवं पाठ्यसामग्री में राष्ट्रीय मूल्यों को ध्यान में रखते हुए इस्लामी मूल्यों के साथ अच्छा तालमेल किया गया है। वहाँ सरकारी नीतियों, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का निर्माण लैंगिक संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए किया गया है। हालाँकि कुछ-कुछ क्षेत्रों में रूढ़िवादिता भी दिखाई देती है। शांति को आवश्यक मूल्य माना गया है और कुरान को इसका आधार बनाया गया है, लेकिन पाठ्यपुस्तकों में आधुनिक सामाजिक समस्याओं के बारे में बहुत कम ध्यान दिया गया है। कक्षा में क्रियाकलाप तथा कक्षा से बाहर अन्य गतिविधियों में लड़के-लड़कियों को समान अवसर दिए जाते हैं। शांति को मानवीय मूल्य रूप में कक्षा तथा कक्षा से बाहर अन्य महत्वपूर्ण स्थानों में विस्तृत रूप से दर्शाया जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में मालद्वीप में एक ही राष्ट्रीय पाठ्यक्रम है। इस द्वीप में प्राथमिक शिक्षा सभी बच्चों के लिए अनिवार्य है। आज की स्थिति में जो अहम चुनौती इस द्वीप की है, वह सभी बच्चों को 10 कक्षा तक अनिवार्यत: शिक्षा प्रदान करना है। इसके लिए सरकार तथा स्वंयसेवी संस्थान प्रयासरत हैं। गुणवत्ता की दृष्टि से अच्छी शिक्षा देना भी अभी मालद्वीप में एक चुनौती के रूप में मौजूद है। यदि हम शिक्षा के आँकड़े देखते हैं, तो सन् 2000 में 15 से 24 वर्ष तक के बालक/बालिकाओं की

* प्रोफ़ेसर और अध्यक्ष, महिला अध्ययन एकक, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

साक्षरता दर 99 प्रतिशत थी और सन् 2007 तक यह स्थिति कायम थी।

प्राथमिक स्तर पर लड़कों की अपेक्षा लड़कियों का शिक्षा में प्रदर्शन ज़्यादा बेहतर है, जबकि उच्च प्राथमिक स्तर पर लड़के/लड़कियों का प्रदर्शन

समान है। शिक्षा नीति में भी लैंगिक संवेदनशीलता और शांति को सम्मिलित किया गया है।

उद्देश्य

मालद्वीप की शिक्षा नीति, पाठ्यक्रम और प्राथमिक स्तर की पुस्तकें, भाषा, सामाजिक अध्ययन और पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों का लिंग संवेदनशीलता तथा शांति के दृष्टिकोण से मूल्यांकन करना।

विधि

प्रस्तुत अध्ययन एक गुणात्मक अध्ययन है। इस विषय पर प्रकाशित सामग्री बहुत ही सीमित है। दक्षिण एशियाई पुस्तकों और शोध में मुश्किल से ही मालद्वीप को शामिल किया गया है। इस अध्ययन में 20वीं शताब्दी में प्रकाशित सामग्री की सहायता ली गई है, जिनमें यूनीसेफ की वार्षिक रिपोर्ट, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक स्थिति से संबंधित कुछ दस्तावेज़ों का प्रयोग किया गया है। जैसे- Dias Edward, 1994 में प्रकाशित, mohamed naseema, essays on early maldives, 2006, statistical year book of maldives 2006. अप्रकाशित रिपोर्ट, जैसे- yashi, ahmed, nashid, hassan, nahid, fathimath, gender analysis of primary textbooks, male, 2007 का भी प्रयोग किया गया है। यह रिपोर्ट एजुकेशन ड्वलपमेन्ट सेन्टर में उपलब्ध हैं। सभी पुस्तकों का मूल्यांकन शांति और लिंग संवेदनशीलता की दृष्टि से किया गया है,

जिसके लिए एक सूची तैयार की गई। इसके अलावा अध्यापिकाओं और बच्चों से प्रश्नोत्तरी तथा विचारविमर्श के द्वारा उनसे शांति और लिंग संवेनदनशीलता के विषय में उनके विचार जानने का प्रयास किया गया।

मालद्वीप गणराज्य की शिक्षा नीति

मालद्वीप राज्य की शिक्षा नीति में शांति और लिंग संवेदनशीलता को ध्यान में रखा गया है और सभी बच्चों को गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने के लिए निर्देश दिए गए हैं शांति के दृष्टिकोण से बाल अधिकार, स्वस्थ जीवन तथा जीवन कौशल पर भी ध्यान दिया गया है। यह

शिक्षा नीति इस बात पर भी ज़ोर देती है कि विद्यालय के वातावरण को बेहतर बनाने और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समुदाय का सहयोग भी लिया जाना चाहिए। 2020 विज़न दस्तावेज़ भी गुणात्मक शिक्षा, जिसमें सामाजिक एकता, शांति और राष्ट्रीय प्रेम की भावना का समावेश हो, को महत्त्व देती है।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम 1999

प्रस्तुत अध्ययन में 1999 के पाठ्यक्रम को यान में रखा गया है। नया पाठ्यक्रम अभी बन रहा है। इस पाठ्यक्रम में भी लिंग संवेदनशीलता और शांति को ध्यान में रखा गया है तथा पाठ्यक्रम के द्वारा यह भी प्रयास किया गया है कि बच्चों में किन गतिविधियों द्वारा विभिन्न विषयों में शांति के मूल्यों को विकसित किया जाए तथा किस प्रकार आपसी भाईचारे की भावना का विकास किया जाए? इसके अंतर्गत बच्चों के आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए भी चर्चा की गई है। समाज की कुरीतियों को किस प्रकार सुलझाया जाए, इसके लिए भी पाठ्यक्रम में कहा गया है। इस संबंध में सरकारी नीतियों, पाठ्यक्रम, पाठ्यविवरण एवं पाठ्यपुस्तकों को जाँचा-परखा गया है, साथ ही बच्चों और अध्यापिकाओं से इस संबंध में विचारविमर्श किया गया।

पुस्तकों के मूल्यांकन के संदर्भ में

प्रस्तुत अध्ययन में जिन पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन किया गया है वह शिक्षण विकास केंद्र द्वारा प्रकाशित की गई हैं। इसके अलावा लैंगिक संवेदनशीलता की दृष्टि से नाहिर शाकिर द्वारा लिखे दस्तावेज़ का भी प्रयोग किया है। इन्होंने मालद्वीप की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण किया था और अपने लेख में प्रस्तुत किया कि प्रारंभिक अवस्था में पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक पक्षपात है।

इस अध्ययन में लैंगिक और शांति के दृष्टिकोण से सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन और अँग्रेज़ी भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन किया गया। ये सारी पुस्तकें मालद्वीप के एजुकेशन ड्वलपमेंट सेंटर से प्रकाशित हुई हैं। सारी पुस्तकें अँग्रेज़ी भाषा में लिखी गई हैं केवल 'दिवेही' जो मातृ भाषा है, की पुस्तक उसी भाषा में रची गई है, प्रस्तुत अध्ययन में उसका ('दिवेही' भाषा की पुस्तक) मूल्यांकन नहीं किया गया है।

इस अध्ययन में जितनी भी पुस्तकों का मूल्यांकन किया गया है, उनकी अधिकांश लेखक महिलाएँ हैं। महिला लेखिका होने की वजह से शायद चित्रों एवं लेखों में महिलाओं के योगदान को नज़रअंदाज नहीं किया गया है। सभी पुस्तकों में लड़के-लड़कियाँ तथा महिला-पुरुष का जिस भी क्षेत्र में योगदान रहा है, वह बराबर दर्शाया गया है।

सभी पुस्तकों के मूल्यांकन से यह प्रतीत होता है कि शांति और लिंग संवेदनशीलता जैसे मूल्य हर पाठ में पिरोए गए हैं। शांति के संदर्भ में इस्लामी धर्म के मूल्यों पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है, जबकि समाज की कुरीतियों को कैसे दूर किया जाए, उस पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। आधुनिक सामाजिक समस्याएँ जो मालद्वीप को ग्रस्त कर रही हैं, वे हैं - नशाखोरी, बाल शोषण तथा तलाक, जिसकी डर यहाँ संसार में सबसे अधिक है। इन समस्याओं का निराकरण कैसे किया जाए, इस पर किसी भी विषय में टिप्पणी तक नहीं की गई है। पर्यावरण की समस्या

आज मालद्वीप का सबसे बड़ा मुद्दा है। इसका गहराई से कोई भी अध्ययन तथा इस समस्या का समाधान कैसे किया जाए इसके विवरण को किसी भी विषय में प्राथमिकता नहीं दी गई है।

लैंगिक संवेदनशीलता और शांति के संदर्भ में पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन

अँग्रेज़ी- मालद्वीप में शिक्षा का माध्यम अँग्रेज़ी है तथा वह एक विषय भी है। प्राथमिक स्तर पर जिन पुस्तकों का मूल्यांकन किया गया है, वह 1 से 7 ग्रेड में पढ़ाई जाती हैं। कोर रीडर तथा पीयूपुइल्स् बुक हर ग्रेड में पढ़ाई जाती है। हर ग्रेड का कोर रीडर तथा पीयूपुइल्स् बुक अलग है। कोर रीडर तथा पीयूपुइल्स् बुक में भाषा का प्रयोग बहुत सरल है और लिंग के दृष्टिकोण से कोई भेदभाव नहीं दर्शाया गया है। जिस शब्दावली को प्रयोग किया है वह पुरूष और महिलाओं के बारे में वे दर्शाते है, जैसे he/she, his/her, human people इत्यादि। व्यक्तियों का नाम उन्हीं रचनाओं में दिया गया है, जो उनके कार्य को उभारते हैं। कुछ ऐसे पाठ भी पाए गए हैं, जहाँ महिलाओं का समाज में योगदान तथा उनकी स्थिति में बदलाव को बहुत अच्छे ढंग से प्रदर्शित किया गया है। जैसे- पारिवारिक क्षेत्र में, हथकरघे के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में और विभिन्न सरकारी दफ्तरों में नारी की भागीदारी का विवरण किया गया है।

प्राचीन और आधुनिक युग में राजनीति की बागडोर एवं अन्य सरकारी विभागों की अध्यक्षता महिलाओं ने की। इसके बारे में भी पीयूपुइल्स् बुक में दर्शाया गया है। इससे यह ज्ञात होता है कि मालद्वीप का समाज महिलाओं को द्वितीय स्थान नहीं प्रदान करता है। यह केवल किताबों में ही नहीं दर्शाया गया है, बल्कि अध्यापिकाओं और अभिभावकों से विचारविमर्श के दौरान यह पता चला कि बचपन से ही माँ-बाप लड़के और लड़कियों में भेदभाव नहीं करते हैं। वे शिक्षा, भोजन, स्वास्थ्य और खेलकूद में समान रूप से अपने बच्चों का विकास करते हैं।

यह सही कहा गया है कि किताबें समाज का एक दर्पण हैं और इसी के संदर्भ में लिंग संवेदनशीलता के दृष्टिकोण से अँग्रेज़ी किताबों में समाज में पुरुष और महिलाओं की समानता को बहुरूपी ढंग से बताया गया है। अँग्रेज़ी पाठ्यपुस्तकों की एक और विशेषता यह है कि इसमें सफल महिलाओं के जीवन के बारे में दर्शाया गया है तथा जिन संघर्षों एवं चुनौतियों

का सामना उन्होंने किया, उसके बारे में भी उल्लेख किया गया है। इसके अलावा महिलाओं के संपत्ति में बराबर के अधिकार का भी विवरण किया गया है।

पर्यावरण अध्ययन

पर्यावरण अध्ययन में संपूर्ण लैंगिक समुदाय को चिह्नित किया गया है। कुछ पाठ जो इसकी

झलक देते हैं, वे लड़के-लड़कियों को समान रूप से पौष्टिक आहार ग्रहण करते हुए दर्शाते हैं। इसके अलावा मनोरंजन के साधनों को समान रूप से लड़के-लड़कियों को उपयोग करते हुए दिखाया गया है। विद्यालयी शिक्षा में जो प्राप्त किया गया है, उसे भी बताते हैं, तथा संचार की आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए चित्र पुस्तक में मौजूद हैं और पाठ में इसका उल्लेख किया गया है।

सामाजिक अध्ययन

हर पाठ की विषयवस्तु में जिस भाषा का प्रयोग हुआ है कि वह लैंगिक समानता को ध्यान में रखकर किया गया है। कुछ शब्द, जैसे - मनुष्य, जनता, he/she , his/her, they/them का प्रयोग किया गया है। केवल उन्हीं पाठों में व्यक्ति विशेष का नाम दिया गया है जो उनसे संबंधित हैं।

अधिकांश चित्र जिनका सामाजिक अध्ययन में प्रयोग किया गया है, वे उनकी भौगोलिक स्थिति, पर्यावरण, रहन-सहन, एवं आर्थिक स्थिति को दर्शाते हैं। कुछ चित्र ऐसे भी हैं, जो लिंग संवेदनशीलता की दृष्टि से उपयुक्त हैं। इनमें महिला और पुरुषों की समान भागीदारी को दर्शाया गया है। दो या तीन पाठ ऐसे हैं, जिनमें मालद्वीप के शासकों के बारे में जानकारी दी गई है। इनमें जो चित्र दिए गए है वे पुरुषों के हैं क्योंकि उनके शासक अधिकतर पुरुष ही थे।

मालद्वीप में कक्षा और कक्षा के भीतर और बाहर की गतिविधियों लिंग संवेदनशीलता एवं शांति का भी ध्यान रखा गया है। जिन कक्षाओं निरीक्षण किया गया उसमें हमने पाया कि कक्षा में व्यवस्थात्मक रूप से भी लैंगिक संवेदनशीलता और शांति को ध्यान में रखा गया है। कक्षा में लड़के और लड़कियाँ साथ-साथ बैठते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर कुछ विद्यालय जैसे- मदरसा अतुल आलिया, मदरसा अतुल अमीर अहमद तथा मदरसा अहमदीया में लड़के और लड़कियों को अलग बैठाया जाता है। कक्षा में समान रूप से लड़के और लड़कियों को अपने विचार प्रकट करने का मौका दिया जाता है। प्रत्येक कक्षा में एक लड़के और एक लड़की का मॉनीटर नियुक्त किया जाता है। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे नृत्य, संगीत, खेलकूद, कुरआन का उच्चारण आदि में लड़के और लड़कियों की समान भागीदारी रहती है। हालाँकि फुटबाल अधिकांशत: लड़के ही खेलते हैं। अध्यापकों का दृष्टिकोण भी लड़के-लड़कियों के प्रति समान है। यदि बच्चों से संबंधित कोई भी व्यावहारिक समस्या उत्पन्न होती है तो अभिभावक व अध्यापक मिलजुलकर उसे सुलझाने का प्रयास करते है न कि विद्यार्थियों को दंड देते हैं।

निष्कर्ष

सारी पाठयपुस्तकों के मूल्यांकन से हम पाते हैं कि मालद्वीप की सभी पाठ्यपुस्तकें उनकी सभ्यता, संस्कृति का भली भांति प्रतिनिधित्व करती हैं। ये सभी पुस्तकें लिंग संवेदनशीलता की दृष्टि से भी उपयुक्त हैं, क्योंकि इन पाठ्यपुस्तकों में हर क्षेत्र में स्त्री और पुरुष की समान भागीदारी और उपस्थिति को दिखाया गया है। सीमित ढंग से कुछ ऐसे शब्दों का

प्रयोग किया गया है जो कुछ हद तक समाज के पुरुष प्रधान दृष्टिकोण को दर्शाते हैं, जैसे- व्यावसायिक कार्य को करते हुए अधिकतर पुरुषों को दिखाया गया है। जैसे- इंजीनियर, बढ़ई, शासक तथा व्यापारी इत्यादि। महिलाओं को ज़्यादातर घरेलू कार्य से जोड़ा गया है। अँग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक में पुरुषों के लिए जो विशेषण दिए गए हैं, वे हैं- स्मार्ट, ऊर्जावान, उत्साही, साहसी जब कि महिलाओं के लिए सुंदर, सुशील, प्यारी, लंबी, पतली, आलसी, मूर्ख, आकर्षक, शब्दों का प्रयोग किया गया है। पर्यावरण अध्ययन में महिलाओं के लिए अच्छी बावर्ची का प्रयोग किया गया है। सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में पुरुषों को जिन गुणों से युक्त बताया गया है वे हैं प्रसिद्ध, सफल, अच्छा और बुद्धिमान आदि। महिलाओं को दान-पुण्य वाले गुणों से युक्त बताया गया है। ये सभी उदाहरण पाठ्यपुस्तकों में उपस्थित लैंगिक रूढ़िवादिता को दिखाते हैं। जैसे कि पहले कहा गया है, शांति के दृष्टिकोण से केवल मूल्यों पर ही ज़ोर दिया गया है। सामाजिक समस्याओं एवं उनके समाधान, जैसे- तलाक, नशाखोरी तथा बाल शोषण पर कोई चर्चा नहीं है। पर्यावरण की देखरेख और उसके बचाव पर भी बहुत सीमित ढंग से लिखा गया है।

अध्यापकों तथा बच्चों से विचारविमर्श के दौरान लिंग संवेदनशीलता और शांति के संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव सामने आए -

- आदर्श महिला- किसी भी क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण कार्यों का विवरण दिया जाना चाहिए।
- प्राचीन समाज से आधुनिक समाज तक बदलती हुई महिलाओं की सामाजिक स्थिति का वर्णन किया जाना चाहिए।
- सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में मालद्वीप के इतिहास का सविस्तार वर्णन किया जाना चाहिए।
- मालद्वीप के शासकों की आत्मकथा को भी पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया जाना चाहिए।
- पर्यावरण की देखरेख और बचाव को महत्त्व देना चाहिए।
- शांति को केवल परंपरागत मूल्यों से न जोड़कर, उसे सामाजिक व आर्थिक स्थिति के अनुसार ध्यान में रखकर व्याख्यायित किया जाना चाहिए।
- लैंगिक संवेदनशीलता और शांति के संदर्भ में कुछ शिक्षकों और छात्राओं की राय थी कि विशेष सूची में बदलाव लाया जाए। औरतों की स्थिति में आ रहे बदलावों को इसमें शामिल किया जाना चाहिए।

❑❑❑